एपिसोड - 31

'क्योटो प्रभाव'

मुख्य शोध व् आलेख - - डॉ० मानस प्रतिम दास
हिंदी अनुवाद - श्रीमती सविता यादव

पर्यावरण से सम्बंधित मुद्दों पर क्योटो प्रोटोकॉल का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जो प्रभाव पड़ा है वह किसी मील के पत्थर से कम नहीं है | प्रतिभागी देशों के तीसरे सम्मेलन में पर्यावरण से सम्बंधित मुद्दों को जिस तरस से रखा गया था, वे ग्रीन-हाउस गैसों को कम करने के लिए एक सराहनीय कदम था | यद्यपि इस प्रयास का ज्यादातर देशों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ने वाला था, परन्तु पृथ्वी के स्वास्थ्य के लिये यह सकारात्मक पहल है |

आज की इस कड़ी में इस प्रोटोकॉल से सम्बंधित विभिन्न पहलुओं पर रोशनी डाली जायेगी | जिससे आप समझ सकेंगे कि यह पहल क्या है ? इसके क्या प्रभाव पड़ने वाले हैं और हम सबकी क्या भूमिका हो सकती है ?

दृश्य : (कॉफ़ी शॉप ..... मध्यम प्रकाश | चार दोस्त, विनीत, अजय, जैकब और श्रीनिवास एक टेबल पर बैठकर, कॉफ़ी का लुत्फ़ उठा रहे हैं | चारों दोस्त अधेड़ उम्र के हैं |)

विनीत : आज किस फ्लेवर का ऑर्डर दिया था, अजय ?

जैकब : अरे ! ये तो कॉफ़ी किसी एंगल से लग ही नहीं रही है | मैं तो कॉफ़ी ही पिऊँगा और कुछ नहीं |

श्रीनिवास : जैकब, इतना क्रोध नहीं करो | तुम्हे पता नहीं है | लगता है, पहली बार इस दुकान पर आये हो | यद्यपि ये कॉफ़ी है, पर जानते हो इसमें और कुछ भी मिलाया गया है | इससे कॉफ़ी का स्वाद हल्का पड़ जाता है |

जैकब : ओह ! ये बात है | स्वाद में ये बदलाव कुक्की के कारण है | इसमें कॉफ़ी का कोई दोष नहीं | (हँसते हुए)

अजय: आज यहाँ पर जापानी फ्लेवर वाली विशेष कुक्की से तैयार की गयी कॉफ़ी सर्व की जा रही है | (हँसते हुए) अच्छा देखते हैं- श्री - इसे पसन्द करता है या नहीं |

श्रीनिवास: अरे ! मेरी ओर गेन्द क्यों उछाल रहे हो | दूसरों की पसन्द-नापसन्द का भी ख्याल रखो |

विनीत : क्यों नहीं ? (हँसते हुए) हम दोस्तों में तुम ही तो हो, जिसने जापान की धरती में सांस लिया है |

श्रीनिवास : वोह ! तुम जापान की हमारी यात्रा की बात कर रहे हो | वो तो चक्रवाती यात्रा थी - केवल एक सप्ताह की | ऐसा लगा, इधर से गये और उधर से लौट आयी |

विनीत : जो कहना है, कह लो | हम तो यह जानते हैं कि हम में से कोई भी वहां एक मिनट के लिये नहीं गया है |

अजय : श्रीनिवास मुझे याद है तुम्हारा कार्य तो क्योटो में ही था | मैं सही कह रहा हूँ ना !

श्रीनिवास : हाँ ये सही है | मुझे अपनी संस्था की तरफ से कई बैठकों में भाग लेना था, जिससे हम अपने प्रोजेक्ट को अंतिम रूप दे सकें | बस...इतना भर काम था|

विनीत : (हँसते हुए) बस इतना भर !

श्रीनिवास: टांग खींचना (lag pulling) तो तुम्हारी पुरानी आदत है | मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता |

जैकब : क्योटो आते ही मुझे, उस ऐतिहासिक समझौतों की याद ताजा हो जाती है |

अजय : विनीत ! ध्यान से कहना | श्रीनिवास के जोड़ीदार भी यहाँ बैठे हुए हैं | जैकब - कॉफ़ी पसन्द नहीं करता - ये तो ठीक है | परन्तु क्योटो पर उसकी अच्छी जानकारी है |

जैकब : चुप करो | आजकल तो बच्चा-बच्चा इससे वाकिफ है | तुम पीछे क्यों पड़े हो ? No more leg pulling.

विनीत : देखो ! अजय कितना गंभीर हो गया है |

जैकब : श्रीनिवास - मैं उसको seriously नहीं लेता | अच्छा बताओगे, क्या तुम उस जगह गए थे, जहाँ पर सभी देशों ने हस्ताक्षर किये थे !

श्रीनिवास : वास्तव में हमारी सभी मिटिंग उसी स्थान पर रखी गई थी जहाँ पर प्रोटोकॉल का मसौदा तैयार किया था | पहले यह कांफ्रेंस हॉल होता था | परन्तु अभी इसको क्योटो अन्तर्राष्ट्रीय सम्मलेन कक्ष के नाम से जाना जाता है |

जैकब : बहुत सुन्दर |

श्रीनिवास : वास्तव में यह बना भी बहुत सुन्दर है | यह एक झील के किनारे पर बनाया गया है | अजय ! तुम्हें मालूम है, अति लोकप्रिय फिल्म "दी चैलेन्ज" के अंतिम भाग को यहीं फिल्माया गया था |

विनीत : मुझे याद आ रहा है | इस फिल्म का निर्माण अस्सी के दशक के पूर्वार्द्ध में किया गया था |

जैकब : देखो (हँसते हुए) विनीत भी क्योटो पहुँच गया है |

श्रीनिवास : परन्तु क्योटो को पर्यावरण सम्मलेन के बाद ही विश्व पटल पर पहचान मिली |

अजय : (लम्बे सांस के साथ) वोह ! पता नहीं क्यों साल दर साल सम्मलेन पर सम्मलेन | क्यों नहीं सारा मसला एक बार में ही सुलझा लिया जाता |

श्रीनिवास: यद्यपि मैं वहाँ गया हूँ और पर्यावरण से सम्बंधित विषयों का ज्ञाता भी नहीं हूँ | परन्तु जहाँ तक मैं जान पाया हूँ ये बाधायें विकसित और विकासशील देशों के मध्य शक्ति बँटवारे की टकराहट के कारण है |

जैकब : पर्यावरण पर बुलाई गई, यह तीसरी कांफ्रेंस थी, जिसको क्योटो में आयोजित किया गया था | अब इनका आयोजन लगातार किया जा रहा है | सभी देशों के प्रतिनिधि हर साल मिलते हैं जिसे Conference of Parties कहा जाता है |

विनीत : किस प्रकार की पार्टियाँ ? राजनीतिक या अन्य

जैकब : यहाँ विभिन्न देश प्रतिनिधियों के रूप में भाग लेते हैं | हालांकि उन सभी की राजनैतिक पहचान होती है परन्तु UNFCC के तहत पार्टी ही कहा जाता है | (विनीत के मुहँ से कॉफ़ी - बाहर आती हुई)

विनीत : क्या - क्या कहा ?

जैकब: UNFCC का अभिप्राय है United Nations Framework Convention on Climate Change यह पर्यावरण को देखने वाली एक अंतर्राष्ट्रीय संस्थान है | इसका विचार - रियो डी जैनेरियो में आयोजित पृथ्वी सम्मलेन में आया था, जिस पर मार्च 1994 में अमल किया गया था |

अजय : विनीत इसे ही तो फन्डा कहा जाता है | जैकब के ज्ञान को हलके में ना लो दोस्त |

विनीत : अजय ! मेरा ये अभिप्राय नहीं था | मुझे दोस्तों के मान-सम्मान का ज्ञान है| जैकब, क्या तुम बताओगे इस सम्मलेन का एजेंडा क्या था ?

जैकब : यहाँ UNFCC की चर्चा हो रही थी | विनीत क्या तुम अपने बच्चों के होम-वर्क में मदद नहीं करते हो ? उन्हें भी तुम्हारी मदद चाहिये |

विनीत : नहीं दोस्त | मेरी पत्नी ये सब कर लेती है | उन्हें पता है, पापा से कोई सहयोग मिलने वाला नहीं है | (हँसते हुए)

श्रीनिवास : (हँसते हुए) जैकब, इनके शांत पारिवारिक जीवन में ताक-झाँक मत करो | आप ही बताइये UNFCC कॉन्वेंशन क्या है?

जैकब : इस समझौते के तहत सभी देश जिन्होंने इस पर हस्ताक्षर किये हैं, उनसे अपेक्षा की जाती है कि निर्धारित स्तर तक ग्रीन-हाउस गैसों के उत्सर्जन पर रोक लगायेंगे |

अजय : ग्रीन हाउस गैस - जैसे कि कार्बन डाई-ऑक्साइड आदि |

जैकब : सही कहा | जब तक आप ये मालूम ना कर लें कि कितनी मात्रा में ग्रीन-हाउस गैसें छोडी गई हैं और कहाँ से आई हैं, तब तक काम आगे नहीं बढ़ सकता है |

श्रीनिवास: मैं मानता हूँ कि इनके आकड़ों के हिसाब से उन्होंने सभी देशों को श्रेणियों में बाँटा है |

विनीत : इसकी प्रथम श्रेणी में किन-किन देशों को रखा गया है ?

श्रीनिवास : हाँ, मैं बताता हूँ | औद्योगिक देश जैसे अमेरिका, इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया और यूरोप संघ के देश इस श्रेणी में रखे गए हैं | आपको आश्चर्य होगा कि साइप्रस, इस्टोनिया, बैलारुस जैसे देश भी इस श्रेणी में आते हैं |

विनीत : अच्छा है, इसमें किसी को ऐतराज नहीं है | (हँसते हुए)

श्रीनिवास : अजय, आजकल आप क्या कर रहे हैं ? और कॉफ़ी का एक दौर और हो जाये | ठीक है ! अच्छा ये भी तो बताइये - तुम्हारे बच्चे किस कक्षा में आ गए हैं |

अजय : छोटा बच्चा कक्षा आठवीं में है और बड़ी बेटी 11वीं कक्षा की छात्रा है |

श्रीनिवास : बड़े प्यारे बच्चे हैं | काफी समय से उनसे मिला नहीं हूँ | आगे किस फील्ड में जाना चाहते हैं ?

अजय : (हँसते हुए) जहाँ तक छोटे बेटे की बात है वह तो विराट कोहली बनना चाहता है और बेटी डॉक्टर बनना चाहती है |

जैकब : बहुत अच्छा कर रहे हैं |

अजय : छोटे बेटे के मन में अनेकों प्लानिंग घूमती रहती हैं | एक सप्ताह पहले कह रहा था, मैं ग़रीब - घूमन्तु - बेघर लोगों के लिए काम करूँगा |

श्रीनिवास: ये तो अच्छी बात है | फिर क्यों चिंता करते हो ?

अजय : इसमें क्या अच्छा है ? जब मैं पूछता हूँ तो कहता है कि आगे चलकर वह आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में पढ़ना चाहेगा |

श्रीनिवास : अजय, कोई चिंता की बात नहीं | आपदा प्रबंधन एक नया क्षेत्र है | जैकब, पर्यावरण से सम्बंधित विषय भी तो इसमें आते हैं |

जैकब : बिल्कुल सही है | प्रबंधन का दायरा बहुत बड़ा है | एक तरफ आपको कार्बन उत्सर्जन कम करने के लिए प्रबंधन करना पड़ता है, वहीं दूसरी तरफ प्राकृतिक या कृत्रिम आपदाओं से होने वाली जन-धन हानि को कम से कम होने के लिए प्रबंधन करना पड़ता है |

श्रीनिवास : विनीत इस विषय का मास्टर है | देखो कॉफ़ी की ट्रे को कैसे पकड़ा हुआ है | क्या प्रबंधन है ? (हँसते हुए)

विनीत : मेरा गुर मेरे पर ही लागू | अब और आगे नहीं जल्दी से आओ और अपनी कॉफ़ी पकड़ो | (हँसते हुए)

(विनीत का ध्यान - दीवार पर लगे पेपर की ओर)

विनीत : श्रीनिवास ! दीवार पर लगे वॉलपेपर को देखो | कितना सुन्दर लग रहा है ?

जैकब : हाँ - जब तक वो लहरें सब कुछ ख़त्म ना कर दे | (हँसते हुए)

विनीत : कितना नकारात्मक विचार | क्या तुम लहरों की इस सुन्दर कला की प्रशन्सा नहीं कर सकते |

जैकब : मैं इस फोटो की बड़ाई तो करूँगा | परन्तु वहीं दूसरी ओर असहाय - भागते हुए लोगों की करुणा भी है |

अजय : विनीत ! फिर देखो, वह अपनी पर आ गया है | ग्लोबल वार्मिंग, सूनामी की लहरें, भूकम्प से बहुत बड़ी हानि होती है |

विनीत : ये तो सभी जानते हैं | परन्तु पर्यावरण की समस्या के समाधान में एक आम नागरिक की क्या भूमिका हो सकती है ये भी तो बताओ |

श्रीनिवास : निश्चय ही हम बहुत कुछ कर सकते हैं | सरकार और प्रशासन को इस दिशा में कदम उठाने के लिए - धरनों और रैलियों के माध्यम से बाध्य कर सकते हैं | जैकब! ठीक कहा ना !

जैकब : बिलकुल सही कहा | अमेरिका - विश्व का सबसे बड़ा प्रदूषण करने वाला देश है और उसे क्योटो - प्रोटोकॉल पर अमल करना चाहिये | वहाँ के नागरिक, इसके लिए अपनी सरकार को बाध्य कर सकते हैं | इसी प्रकार कनाडा और दूसरे देशों के लोगों को भी आगे आना चाहिये |

विनीत : जैकब ये तो ठीक है, सरकार के कार्यों पर प्रतिक्रिया देना सरल है | उन पर भी दबाव होते हैं जिन्हें नकारा नहीं जा सकता है |

जैकब : देखो इस चित्र को | कैसे लहरें उठ रही हैं | इससे पहले कि सब कुछ हाथ से निकल जाए, हमें कदम तो उठाने ही पड़ेंगे|

श्रीनिवास : क्योटो सम्मलेन का आयोजन 1997 में हुआ था | उस समय इसमें लिए गये निर्णयों पर कुछ समय सीमा लगाई गई थी |

जैकब : तुमने बिल्कुल सही कहा है | क्योटो कांफ्रेंस में दो तरह की समय सीमाएँ निर्धारित की गई थी | पहला था 2008 से 2012 तक की और दूसरी समय सीमा रखी गई थी 2012 से 2020 तक की | श्रेणी एक के सभी देशों ने, सिवाय अमेरिका के सभी ने सका पालन किया और निर्धारित मापदंडों को पूरा किया |

श्रीनिवास : और दूसरी समय सीमा का क्या हुआ ?

जैकब : श्रेणी एक में रखे गये 37 देशों और यूरोपिय संघ के देशों ने भी इसे पूरा करने का निर्णय लिया है |

विनीत : समझे ! आखिर वो टारगेट क्या था ? जब सभी देश समझौते का पालन कर सकते हैं तो अमेरिका अपने कदम क्यों पीछे हटा रहा है |

जैकब : हाँ ! पहले प्रयास में सभी देशों को 1990 के मुकाबले अपने यहाँ हो रही ग्रीन-हाउस गैसों का उत्सर्जन 5% कम करना था |

विनीत : केवल 5% ! यह तो नगण्य सी मात्रा है | फिर अमेरिका क्यों नहीं मान रहा है ?

अजय : (हँसते हुए) 5% वास्तविक मात्रा में एक बहुत बड़ी संख्या हो जाती है | इसके लिए आपको बड़ी मात्रा में कोयले, पेट्रोल और गैसों की खपत को कम करना होगा | इससे वहां के जीवन स्तर में कमी आने का भय है | वहाँ की सरकारों के लिए इतना बड़ा निर्णय लेना आसान नहीं था | यही कारण है कि अमेरिका ने सभी स्तरों पर इसका विरोध किया |

जैकब : श्रीनिवास - आप अपने फोन में क्या देख रहे हो ?

श्रीनिवास : मैं अपने एक दोस्त को फोन कर रहा हूँ | क्योटो प्रोटोकॉल में साफ़ ऊर्जा की जो बात कही गई है वो अच्छी तरह बता सकते हैं | वो इसी क्षेत्र में काम कर रही है |

अजय : क्या नाम है ? क्या हम जानते हैं उसे ?

श्रीनिवास : आप उसे नहीं जानते हैं | उसका नाम शमीमा है | अभी उनका व्यवसाय कर्नाटक में है | परन्तु अपने कार्यों के लिए वह विश्व के अन्य देशों में जाती रहती हैं | पता करता हूँ - कहाँ पर है |

(श्रीनिवास अपने मोबाइल से फ़ोन करता है)

श्रीनिवास: हाय शमीमा ! मैं श्रीनिवास..... | कैसी हो और कहाँ पर हो ? आवाज साफ़ नहीं आ रही.....जरा ठहरो....हाँ अब स्पष्ट है | अच्छा डेनमार्क में.... बड़ा सुंदर देश है | क्या थोडा समय निकालोगी | मेरे दोस्त मेरे साथ हैं | हम यहाँ कॉफ़ी-हाउस में क्योटो प्रोटोकॉल पर चर्चा कर रहे हैं | वो सब कार्बन क्रेडिट के बारे में जानना चाहते हैं } अच्छा मैं speaker पर फ़ोन को रख रहा हूँ |

(शमीमा की आवाज सुनाई दे रही है)

शमीमा : हेल्लो ! आप सभी कैसे हैं ? मैं शमीमा बोल रही हूँ | अच्छा आप लोगों के क्या सवाल हैं ?

अजय : हैल्लो शमीमा ! मैं अजय और एक MNC में वित्त विशेषज्ञ हूँ | मैंने कार्बन क्रेडिट के बारे में सुना है, परन्तु इसके बारे में स्पष्ट नहीं हूँ | हम चारों इसके बारे में अनभिज्ञ हैं | आखिर यह कैसे काम करता है ?

शमीमा : हाँलाकि यह बेसिक सवाल है, परन्तु यह पता होना बहुत जरुरी है कि यह सिस्टम कैसे काम करता है ?

श्रीनिवास : शमीमा.... यह अच्छा होगा यदि आप कार्बन फुटप्रिंट से अपना उत्तर शुरू करें |

शमीमा : ठीक है श्रीनिवास ! कार्बन फुटप्रिंट एक तरह का मापदण्ड और पैमाना है, जिससे यह पता लगाया जाता है कि किसी उत्पादन कार्य में किस मात्रा में ग्रीन-हाउस गैसों का उत्सर्जन होता है | इसकी गणना टनों में की जाती है | केंद्रीय सरकार इसके लिए परमिट जारी करती है | यह राष्ट्रीय या फिर अंतर्राष्ट्रीय संस्था भी हो सकती है | यह परमिट कुल मात्रा में उत्सर्जित ग्रीन-हाउस गैसों का टनों में मापन कर निर्धारित होता है |

श्रीनिवास : इसका अभिप्राय हुआ कि यह अनुज्ञा पत्र इन गैसों के उत्सर्जन को किसी हद तक कम करता है |

शमीमा : हाँ - ऐसा ही है | इससे वायु प्रदूषण पर रोक लगती है, वहीं उत्पादन गतिविधियों पर प्रतिबन्ध भी संभव है | यदि उद्योगों को अपनी विकास गति बनाई रखनी है तो उन्हें कार्बन क्रेडिट की आवश्यकता होगी |

अजय : परन्तु कार्बन क्रेडिट आयेगी कहाँ से ?

शमीमा : यदि किसी कंपनी के पास उसकी आवश्यकता से अधिक कार्बन क्रेडिट उपलब्ध है तो वह दूसरी इकाइयों को इसे विक्रय कर सकती है | इसके लिए यूरोपियन क्लाइमेट एक्सचेंज, शिकागो क्लाइमेट एक्सचेंज, नासडॉक, ओएमएक्स कार्य करते हैं |

जैकब : शमीमा ! हमारे देश की क्या स्थिति है और हमारा क्या स्थान है ?

शमीमा : देखिये, इसके अनेकों मापदण्ड हैं | मेरे अपने विचार हैं | कार्बन क्रेडिट का हमारे लिए आर्थिक दृष्टि से बहुत बड़ा महत्व है | हमारा विकास अभी शुरू

हुआ है | हम विकास का नया और टिकाऊ मॉडल चुन सकते हैं | ऊर्जा सरंक्षण और ऊर्जा उत्पादन की नई विधियाँ अपनाकर बहुत आगे जा सकते हैं |

विनीत : क्या हमारे पास इसके लिए आवश्यक तकनीकी हैं |

शमीमा : मेरा उत्तर ना में होगा | परन्तु इसके लिए कई अन्य रास्ते हो सकते हैं | शुरू में कुछ समस्याएं आ सकती हैं | हम अपनी युवा शक्ति का इस्तेमाल करके, इससे भरपूर लाभ उठा सकते हैं |

श्रीनिवास : आपका अभिप्राय है कम से कम मशीनों और जीवाश्म ईंधन का प्रयोग करके |

शमीमा : बिलकुल ठीक कहा | इसे आप लोग पसन्द नहीं करेंगे, परन्तु यह सभी के लिए फायदेमंद होगा | इसमें, पुरानी पड़ चुकी विदेशी औद्योगिक ईकाइयों को, कार्बन क्रेडिट विक्रय करके लाभ कमा सकते हैं |

अजय : मेरा मानना है कि छोटी इकाइयाँ इसमें बड़ी भूमिका अदा कर सकती हैं |

शमीमा : तुम्हारा अनुमान सही है | भारत की लघु औद्योगिक ईकाइयाँ बहुत काम कर सकती हैं | इन ईकाइयों में सस्ती ऊर्जा दक्षता वाली तकनीक काम में ली जा रही है |

जैकब : क्या हमारे लिए कार्बन क्रेडिट का यही एक तरीका है ?

शमीमा : ऐसा नहीं है | आप अच्छी दक्षता वाली प्लास्टिक को री-साइकल करने वाली ईकाइयाँ लगा सकते हैं | आप खाली धातु के डब्बों को री-साइकल करके वाहनों के बनाने में काम ले सकते हैं | हमारे लिए अनेकों रास्ते खुले हैं |

श्रीनिवास : मेरा मानना है - आपका काम खूब चल निकला है (हँसते हुए)

शमीमा : मेरी एक ब्रोकरेज फार्म है | हमारे देश में सैकड़ों कम्पनियाँ हैं, जो इस क्षेत्र में काम कर रही हैं | भारत और चीन सबसे बड़े कार्बन क्रेडिट के विक्रेता हैं और इसका सबसे बड़ा क्रेता | वृक्षारोपण के क्षेत्र में काम करने वाली कम्पनियाँ और नगर पालिकायें कार्बन क्रेडिट से लाखों कमा सकती हैं |

जैकब : क्या, कोई ऐसा उदाहरण याद आ रहा है ?

शमीमा : हाँ... बड़ी ईकाइयों में विजयनगर स्टील प्लाँट, अच्छा काम कर रहा है | नई ऊर्जा दक्षता वाली तकनीक से अगले 10 सालों में इन्होंने 225 मिलियन डॉलर कमाने का लक्ष्य रखा है | दूसरा उदाहरण है - मध्य प्रदेश का हाँडिया वृक्षारोपण कार्यक्रम |

जैकब : अच्छा - क्या हुआ है ?

शमीमा : वहाँ पर 95 गाँवों में वृक्षारोपण के द्वारा 30 लाख डॉलर प्रति वर्ष आय होने का अनुमान है यानी करोड़ों का लाभ....

श्रीनिवास : क्या बात है ? बधाई के पात्र हैं सभी गाँव वाले |

शमीमा : सही है | श्रीनिवास, मुझे आवश्यक कार्य के लिए जाना है, प्लीज़ माफ़ करना | आगे फिर कभी मैं तुम्हारे सभी सवालों का जबाव दूंगी | O.K. Bye! See you all.

श्रीनिवास : बहुत-बहुत धन्यवाद शमीमा | Bye. # (श्रीनिवास phone काटता है) #

जैकब : जो कुछ उभर कर आया है उससे यही लगता है कि क्योटो संधि - ग्रीन हाउस गैसों को कम करने में सीधे तौर पर कारगर नहीं है |

श्रीनिवास : क्या ऐसा है ?

जैकब : हाँ | जब तक कोई अन्तर्राष्ट्रीय क़ानून बने, तब तक इन गैसों की मात्रा बहुत बढ़ चुकी होगी | हालाँकि यूरोपियन संघ के देश अपना लक्ष्य प्राप्त करने के लिए प्रयत्न कर रहे हैं | परन्तु बहुत सारे देश अभी पीछे हैं |

अजय : वो कौन से देश हैं ?

जैकब : बहुत सारे हैं | चीन और अमेरिका बड़ी मात्रा में इन गैसों का उत्सर्जन कर रहे हैं |सभी किए गये प्रयत्न फिर वहीं आ ठहरते हैं |

अजय : आपका मतलब - ढाक के तीन पात .....

जैकब : 1990 से 2009 के मध्य - विश्व में इनका उत्सर्जन लगभग 40% बढ़ा है | ये आंकड़े नीदरलैंड की पर्यावरण का आंकलन करने वाली संस्था ने जारी किये हैं |

श्रीनिवास : क्या कह सकते हैं ? ज्यादातर सभी लोग पर्यावरण के प्रति चिंतित हैं परन्तु कोई समाधान नहीं निकल रहा है |

अजय : मेरे विचार में, इस क्योटो समझौते पर चर्चा करते हुए, कॉफ़ी का तीसरा राउंड सम्भव नहीं | (हँसते हुए)

विनीत : हाँ, पर मेरे पास एक प्लान है |

श्रीनिवास : क्या प्लान है ?

विनीत : क्योंकि मेरे बच्चे आज घर पर नहीं है | खाना बाहर से ही मंगाना पड़ेगा | क्यों नहीं हम एक साथ बैठकर खाना खाएँ |

श्रीनिवास: मेरे लिए कोई समस्या नहीं है |

विनीत : मुझे पास ही एक रेस्टोरेंट का मालूम है | वहां का कुक बहुत ही मजेदार खाना बनाता है |

जैकब : हाँ, इससे पहले कि हम खाने के लिए कहीं और चलें, मैं बाली कांफ्रेंस के बारे में कुछ बताना चाहूँगा |

विनीत : उसका खाने से क्या सम्बन्ध ? मैं समझा नहीं | हमने इन पर बहुत चर्चा कर ली है|

अजय : अरे भाई ! थोड़ी देर और बैठ जाओ? जैकब को अपनी बात समाप्त करने दो |

जैकब : यह सम्मलेन - क्योटो प्रोटोकॉल के उद्धेश्यों और लक्ष्यों को हाँसिल करने के लिए बुलाया गया था |

श्रीनिवास : ठीक है | आप अपनी बात को जारी रखो |

जैकब : आपको पता ही है क्योटो प्रोटोकॉल फरवरी 2005 में लागू हुआ था | इसकी समय अवधि 2012 तक थी | निश्चय ही इसके आगे की रूपरेखा भी तैयार करनी थी |

अजय : यह जरुरी भी था |

जैकब : यूरोप संघ के सभी देश, एक ऐसी सन्धी चाहते थे जो सभी देशों पर लागू हो | मेरा मतलब विकसित और विकासशील देश | बहुत कम देशों को आशा थी कि अमेरिका क्योटो सन्धि के बाद किसी नये समझौते पर हस्ताक्षर करेगा |

विनीत : इसलिए एक नई सन्धि का मसौदा तैयार किया गया है |

जैकब : विनीत थोड़ा विस्तार से बताओ | ये विभिन्न देशों के मध्य हुए महत्वपूर्ण समझौते हैं | विभिन्न देशों के मध्य, 13वाँ सम्मलेन सन 2007 में बुलाई गई थी | यह बैठक इण्डोनेशिया के बाली प्रायद्वीप में आयोजित की गई थी | याद रहे, उस बैठक में नोबेल शांति पुरस्कार से नवाजे गये, अमेरिका के पूर्व उपराष्ट्रपति अल - गोरे ने, ग्लोबल वार्मिंग पर अपनी फिल्म प्रदर्शित की थी |

विनीत : एक कड़वा सच | ये एक बहुत ही डरावनी फिल्म है | क्या हम सब उसी प्रकार से मारे जायेंगे |

जैकब : यदि हम ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन इसी प्रकार से जारी रखेंगे तो वही परिणाम होगा | जून 2007 से IPCC चैनल ने अपनी चौथी रिपोर्ट में बताया था कि मानव ही इसके लिए जिम्मेदार है |

अजय : बाली में माहौल काफी गर्म रहा होगा |

जैकब : आपने सही कहा | सरकारी प्रतिनिधियों के आलावा बड़ी संख्या में गैर-सरकारी संगठनों ने भी उसमें भाग लिया था | सभी जानना चाहते थे कि ऊँट किस करवट बैठता है ?

श्रीनिवास : परन्तु मुझे नहीं लगता, किसी निर्णय पर पहुँचा जा सका होगा !

जैकब : आपने ठीक पकड़ा (हँसते हुए) | जो ड्राफ्ट यूरोप के संघ देशों ने पेश किया था, उस पर सहमति नहीं बन पाई | अमेरिका अपनी पूर्व की स्थिति से टस से मश नहीं हुआ| समुद्री जहाज़ों और हवाई जहाजों से होने वाले प्रदूषण पर भी कोई बात नहीं बन पाई|

श्रीनिवास: यानी जहाँ से चले थे वहीं पर आ पहुँचे - वह भी अन्धकार में |

जैकब : केवल एक सकारात्मक पक्ष | वह था बाली रोड-मैप | भाग लेने वाले देशों में सहमति बनी कि ग्लोबल वार्मिंग की समस्या के लिए समाधान जारी रखेंगे और अगले दो वर्षों में किसी सन्धी पर हस्ताक्षर हो पायेंगे |

विनीत : ठीक-ठाक ! परन्तु मैं तो अब दो मिनट भी और इंतज़ार नहीं कर सकता हूँ | भूख से पेट में चूहे दौड़ रहे हैं |

जैकब : ठीक भई ! समझ गये | और कोई चर्चा नहीं | आज हमारी अभी की सबसे बड़ी आवश्यकता है - भोजन | आओ चलते हैं |

विनीत : यहाँ से पैदल का ही रास्ता है | रास्ता साफ़ है और आज सड़क पर वाहन भी कम हैं| आइये पैदल निकलते हैं |

सभी एक साथ उठते हैं और हँसते हैं

(समापन संगीत)